Read India

An Imprint of Pratham Books

घर जाना है

रुक्मिणी बॅनर्जी
संतोष पुजारी
केतन राऊत

Original Story (English) Going Home
by Rukmini Banerji
© Pratham Books 2004
Fourth Edition: 2009

Illustrations: Santosh Pujari and Ketan Raut
Hindi Translation: Pratham Pustak Samuh

ISBN: 81-8263-052-5

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th 'C' Main, 6th 'B' Cross,
OMBR Layout, Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526,
New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Trimiti Services

Printed by: Shubhodaya Printers

Published by PRATHAM BOOKS
www.prathambooks.org

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

घर जाना है

लेखिका
रुक्मिणी बॅनर्जी
चित्रांकन
संतोष पुजारी
केतन राऊत
हिंदी अनुवाद
प्रथम पुस्तक समूह

स्कूल में छुट्टी हो गयी है ।

बच्चे स्कूल से जा रहे हैं ।

टीचर स्कूल से जा रही हैं ।

सभी लोग घर जा रहे हैं ।

मैं गेट से बाहर निकलती हूँ ।

मैं जल्दी में हूँ ।

मेरे पास खेलने के लिए समय नहीं है ।

मेरे पास बात करने के लिए समय नहीं है ।

मैं जल्दी घर जाना चाहती हूँ ।

स्कूल से निकल कर बाहर आती हूँ ।
यह एक पतली गली है ।
गली से होते हुए आगे आती हूँ ।
वहाँ पर एक बड़ी सड़क है ।

बड़ी सड़क पर बहुत भीड़ है ।

कार, ट्रक, साइकिल,

मोटर साइकिल, स्कूटर,

और ऑटो रिक्शा !

कुछ इधर जा रहे हैं ।

कुछ उधर जा रहे हैं ।

मुझे खाली जगह देखकर

उस पार दौड़ना आता है।

मैं सड़क के बीच तक पहुँच गयी हूँ ।

आगे बहुत सी गाड़ियाँ हैं ।

पीछे भी बहुत सी गाड़ियाँ हैं ।

मुझे सावधान रहना चाहिये ।

सड़क के उस पार चनेवाला है ।
जल्दी में मैं उससे टकरा जाती हूँ ।
वह गुस्से में डाँटता है ।
मैं माफ़ी माँग कर आगे भागती हूँ ।

मैं दुकानों के आगे से निकलती हूँ ।
लोग तरह तरह की चीज़ें खरीद रहे हैं ।
सामने खिलौने की दुकान भी है ।
पर आज मैं रुक नहीं सकती ।

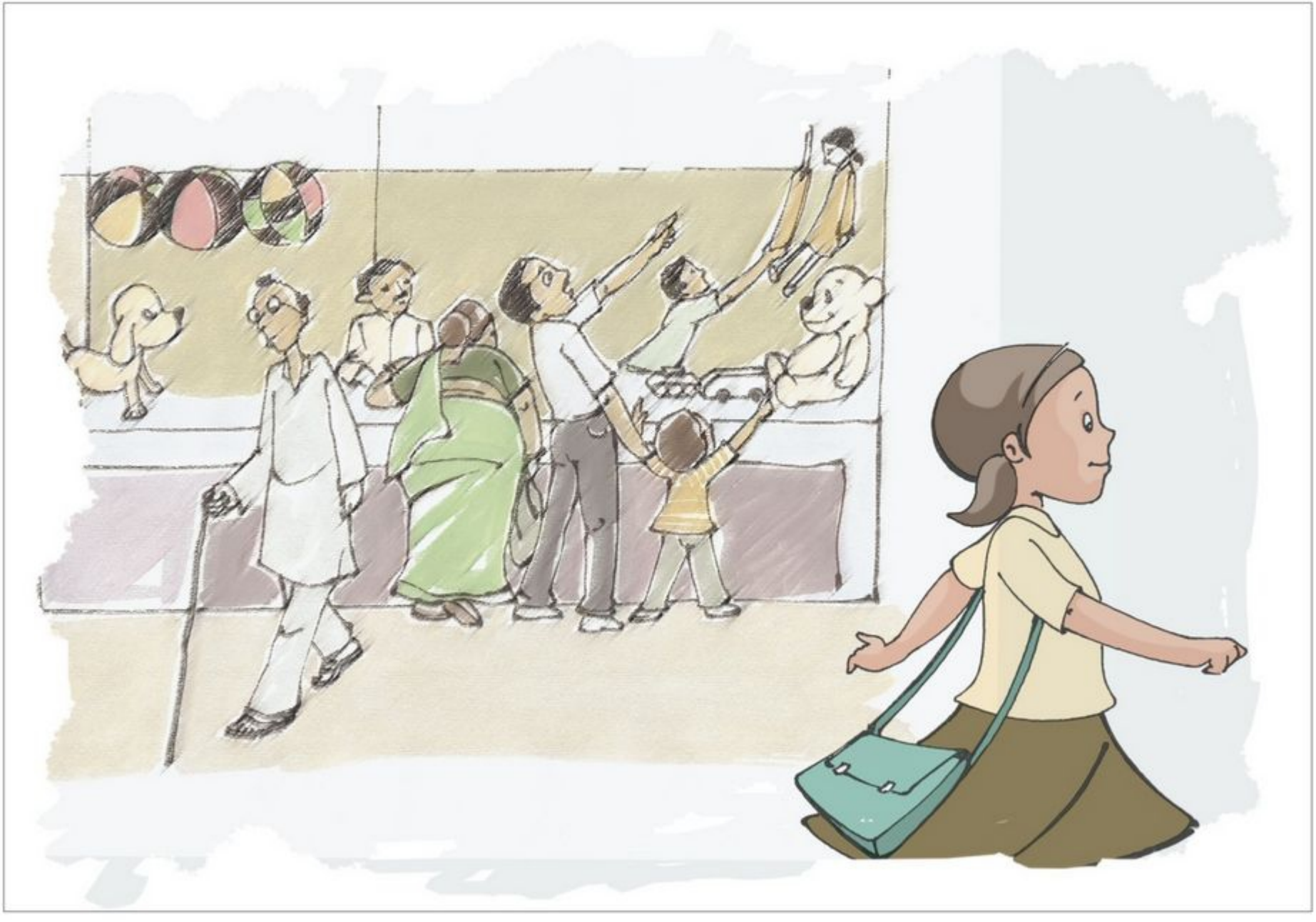

मैं जल्दी–जल्दी चलती हूँ ।
अब मछली की दुकानें हैं ।
बड़ी मछली, छोटी मछली,
लम्बी मछली, चपटी मछली,
चमकीली मछली, मटमैली मछली,
हर दुकान में इतनी सारी मछलियाँ ।

अब मुझे दौड़ना ही पड़ेगा ।
कपड़े की दुकान,
वीडिओ की दुकान,
नाई की दुकान के सामने,
पान वाले के सामने से,
दौड़ते, दौड़ते
मैं आगे पहुँचती हूँ ।

CLOTH
SHOP
Video

आखिर मैं घर पहुँच ही गयी !

अरे वाह ! मुझे देर नहीं हुई ।

मेरे पिता जी दोपहर बाद काम पर जाते हैं ।

अभी वे गये नहीं हैं ।

उनकी साइकिल अभी भी खड़ी है ।

मेरे पिता जी बाहर आते हैं,
मेरी माँ उनके पीछे हैं ।
पिता जी मुझे गले लगा लेते हैं ।
फिर वे काम पर निकल जाते हैं ।

अब मुझे कोई जल्दी नहीं है ।
मेरे पास समय ही समय है ।

यह नन्ही लड़की जल्दी घर पहुँचना चाहती है।
पढ़िये उसकी प्यारी कहानी...

ऐसे ही बच्चों के अनुभव कुछ और किताबों में आपको पढ़ने को मिलेंगे।

हम बाज़ार गये	चलो किताबें खरीदने
चाचा की शादी	हमारी बालवाड़ी

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिए www.prathambooks.org पर लॉग ऑन करें।
हमारी किताबें अंगेजी, हिन्दी, तमिल, तेलुगू, कन्नड, मराठी, गुजराती, बाँग्ला, पंजाबी, उर्दू व ओड़िया भाषाओं में उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने वाली गैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 81-8263-052-5
9 788182 630529

Age Group : 3-6 years
Ghar Jana Hai (Hindi)
MRP Rs. 15.00